क्रिकेट की स्थापना हुई है मेरे हिंदुस्तान में, पहला खेल खेला था जमनातट पर नंदलाल ने-सत्यनारायण सत्तन



देवास। श्रोताओं की वाह वाह और तालियों की गूंज के बीच कैलादेवी मंदिर में श्रीमद भागवत के मंच पर 7 अप्रेल को देर रात तक चले अखिल भारतीय कवि सम्मेलन ने अनूठी छाप छोड़ी। जब कवि सम्मेलन के कुशल संचालक कवियों के गुरू नौ रसों के ज्ञाता सत्यनारायण सत्तन ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच अपनी राष्ट्र भक्ति रचनाओं का पाठ सुनाया

आ गया है वक्त जागते रहो ना सोईये
हमलावरों के रक्त से अपने शस्त्र को धोईये ।

मालवा की महिला का सुंदर बखान करते हुए कहा मां हिन्दी शब्द और लव अंग्रेजी है माता के प्रेम की भावना का नाम है मालव है।श्री कृष्ण ने जीवन जीना और खेल खेना भी सिखाया है।

क्रिकेट की स्थापना हुई मेरे हिंदुस्तान में
पहला खेल खेला था जमना तट पर नंदलाल ने।

राष्ट्र भक्ति और धर्म भक्ति की रचनाओं का पाठ किया।

लखनव के वीर रस के प्राकृत एंव राष्ट्रीय कवि वेदव्रत वाजपेई ने अपनी उम्दा रचनाये सुनाते हुए कहा कि आखिर कब तक देश जलेगा उग्रवाद की भट्टी में।

हमको पूरी दुनिया करना है अपनी मुट्ठी में।
अभी तिरंगे के रंगों का ठीक से उड़ाना बाकी है
कटे फटे मान चित्र का पूरा जुड़ना बाकी है

राष्ट्र भक्ति की रचनाओं को सुनकर श्रोताओं ने भारत माता की जयकारे से पांडाल को गुंजायमान कर दिया। देवास के राष्ट्रीय कवि देवकृष्ण व्यास ने अपना रचना पाठ करते हुए सुनाया कि

यह धरती है सनातनी की,
नहीं जरूरत तनातनी की।

इतिहास के पन्ने खोल के देखो, जीवित मिला प्रमाण है

जहां खोदा वहां वहां भगवान है। सहित राष्ट्रीय एवं आध्यात्मिक रचनाओं का पाठ किया। गुजरात भुज से आई कवियत्रि मोनिका हठीला ने शानदार सरस्वती वंदना के साथ अपनी श्रृंगार एवं प्रेरक रचनाएं सुनाई। उनकी मुट्ठी में जान होती है जिनकी बेटी जवान होती है।

बारा राजस्थान के हास्य व्यंग कवि सत्येन्द्र यज्ञवेन्द्र ने अपनी हास्य व्यंग रचनाओं से श्रोताओं को ओतप्रोत करदी एवं शाजापुर के हास्य कवि दिनेश देसी घी ने हास्य पेरोडी पढ़ कर श्रोताओं को ठहाके लगाने मजबूर कर दिया। चेतन उपाध्याय ने चुटीली रचनाओं के साथ कविता मंच का स्वागत संचालन किया। अतिथियों का स्वागत आयोजक मन्नुलाल गर्ग, शंकरलाल अग्रवाल, समिति संयोजक रायसिंह सेंधव, राजेश यादव, अजबसिंह ठाकुर, रमण शर्मा, माखन सिंह राजपूत,गोविंद अग्रवाल, मोहन श्रीवास्तव, हेमंत जैन आदि ने किया। कवियों का आभार जयेश गर्ग ने माना। बड़ी संख्याएं में महिला पुरुषों श्रोताओं ने देर रात तक कवियों को सुनकर आनंद लिया ।